Dr. Laxmi Kumari
Deptt. of PSY
R.N.C. Parsa
Page No.
Date - 6-5-2020

Q. अस्तित्ववादी मनोविज्ञान के मूल सिद्धांतों का वर्णन करें।

Ans - अस्तित्ववादी मनोविज्ञान मनोविज्ञान के क्षेत्र में एक तरह का आंदोलन था न कि विशेष सम्प्रदाय। अस्तित्ववादी मनोविज्ञान का विकास यूरोप में हुआ परन्तु तुरंत ही यह अमेरिका में फैल गया। यह मनोविज्ञान व्यवहारवाद का विरोध करता है। इस मनोविज्ञान का मत है कि व्यवहारवाद ने मनुष्यों को एक मशीन रूप जैसा समझा है जो बिल्कुल गलत है। मनुष्य का व्यवहार अनुबंधित प्रतिवर्त की एक श्रृंखला नहीं होती है जैसा कि व्यवहारवाद में कहा जाता था। अस्तित्ववादी मनोविज्ञान सम्पूर्ण व्यक्ति का जैसा कि वह अपने अस्तित्ववादी वास्तविकता में होता है, का अध्ययन करता है।

मूल सिद्धांत

अस्तित्ववादी मनोविज्ञान में मानव प्रकृति को समझने के लिए पक्ष पर अधिकतम डाला गया है। अस्तित्ववादी मनोवैज्ञानिकों द्वारा मनुष्य की प्रकृति को समझने के लिए एक नया दृष्टिकोण अपनाया गया। इनलोगों का मत था कि आधुनिक समय में मनोविज्ञान मानव प्रकृति की सम्पूर्णता को सही-सही ढंग से समझाने में विफल रहा है। फलतः इसे समझने की विशेष कोशिश करनी चाहिए।

अस्तित्ववादी मनोविज्ञान में मुख्य रूप से ही व्यक्ति पर ध्यान दिया जाता है जिसके द्वारा मानव प्रकृति की वास्तविकता तथा समस्याओं की विवेचना व्यक्ति का वास्तविक अस्तित्व होता है उसकी प्रकृति विचार इस प्रकार हैं

(1) अस्तित्ववादी मनोविज्ञान का स्वरूप मनुष्य अपने-आप अस्तित्व, मनोविज्ञान आदि समस्याएं रहती हैं।

(2) प्रत्येक व्यक्ति की वास्तविक जिंदगी अलग-अलग होती है जिसकी भिन्न-भिन्न [illegible] के प्रभाव होते हैं तथा [illegible] व्यक्तियों की समस्याएँ भी भिन्न-भिन्न होती हैं। व्यक्ति की वास्तविक जिंदगी अलग-अलग ही नहीं होती है बल्कि एक जीवित प्राणी के रूप में अन्य सभी जातियों के प्राणी से भिन्न होती है। मनुष्य एक विशेष प्राणी है जिसकी विशेषताएं पशुओं की विशेषताएं से भिन्न ही नहीं बल्कि कहीं श्रेष्ठ होती है।

(3) अस्तित्ववादी मनोविज्ञान का उद्देश्य अस्तित्ववादी व्यक्ति की केवल स्वतंत्र अस्तित्व [illegible] वास्तविकता के [illegible] व्यक्ति की स्वतंत्रता का [illegible] अस्तित्ववादी वास्तविकता के संदर्भ में अध्ययन को किया जाता है।

(4) अस्तित्ववादी मनोविज्ञान में मुख्य रूप से [illegible] पर ही बल दिया जाता [illegible]

Scanned with CamScanner

जिसे अस्तित्ववादी लोकतंत्र एवं लिया गया है। ऐसे सिद्धान्तों के प्रमुख विषयों में मानव में अकेलापन का अनुभव, ज्ञान बोध, मूल्यों, जिन्दगी का अर्थ निकला, इ. एवं मृत्यु आदि प्रमुख हैं।

(5) अस्तित्ववादी मनोविज्ञान द्वारा निर्धारित्व का पूर्णतः अस्वीकार किया जाता है। इस मनोविज्ञान के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति अपने अस्तित्व के लिए स्वयं उत्तरदायी है वह अपने अस्तित्ववादी क्रियाओं का मालिक वह स्वयं होता है। उस पर और बाहरी वातावरण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

(6) मानवतावादी मनोविज्ञान की भाँति अस्तित्ववादी मनोविज्ञान का स्वरूप प्रयोगात्मक नहीं होता है बल्कि चेतन के स्वरूप, अनुभूतियों तथा आत्मनिष्ठ वास्तविकता का विश्लेषण के आधार पर किया जाता है। इस विधि में चेतन स्तर की चीजों का वर्णन किया जाता है जिसे व्यक्ति अनुभव करता है या कल्पना करता है, इसके तीन पहलू इस प्रकार हैं-

(i) अन्तर्बोध - व्यक्ति अपने चेतन अनुभूति पर अपना ध्यान केंद्रित करता है।

(ii) विश्लेषण - इसमें चेतन अनुभूतियों के विभिन्न पहलुओं की विभिन्न पहचान की जाती है।

(iii) वर्णन कारक - इसमें व्यक्ति चेतन अनुभूतियों को एक ऐसी भाषा में व्यक्त करता है।

Scanned with CamScanner